لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ
مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾

148. अल्लाह किसी (की) बुरी बात का बआवाज़े बुलंद (ज़ाहिरन व ए'लानियतन) केहना पसंद नहीं फ़रमाता सिवाए उसके जिस पर ज़ुल्म हुवा हो (उसे ज़ालिम का ज़ुल्म आशकार करने की इजाज़त है), और अल्लाह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا
عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا
قَدِيْرًا ﴿۱۴۹﴾

149. अगर तुम किसी कारे खै़र को ज़ाहिर करो या उसे मुख़्फ़ी रखो या किसी (की) बुराई से दरगुज़र करो तो बेशक अल्लाह बड़ा मुआफ़ फ़रमानेवाला बड़ी क़ुदरतवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ
وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ
وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۙ﴿۱۵۰﴾

150. बिला शुब्हा जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ कुफ़्र करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान तफ़रीक़ करें और केहते हैं कि हम बा'ज़ को मानते हैं और बा'ज़ को नहीं मानते और चाहते हैं कि उस (ईमानो कुफ़्र) के दरमियान कोई राह निकाल लें।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَ
اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۵۱﴾

151. ऐसे ही लोग दर हक़ीक़त काफ़िर हैं, और हमने काफ़िरों के लिए रुस्वा कुन अज़ाब तैयार कर रखा है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ
يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ
سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾ ع ٢١

152. और जो लोग अल्लाह और उसके (सब) रसूलों पर ईमान लाए और उन (पयग़म्बरों) में से किसी के दरमियान (ईमान लाने में) फ़र्क़ न किया तो अनक़रीब वोह उन्हें उनके अज्र अता फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ
عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا
مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا
اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

153. (ऐ हबीब!) आपसे अहले किताब सवाल करते हैं कि आप उन पर आस्मान से (एक ही दफ़ा पूरी लिखी हुई) कोई किताब उतार लाएं तो वोह मूसा (عليه السلام) से उससे भी बड़ा सवाल कर चुके हैं, उन्होंने कहा था कि हमें अल्लाह (की ज़ात) खुल्लम खुल्ला दिखा दो पस उनके (इस)

بِظُلْمِهِمْ ج ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ج وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

जुल्म (या'नी गुस्ताख़ाना सवाल) की वजह से उन्हें आस्मानी बिजली ने आ पकड़ा (जिसके बाइस वोह मर गए, फिर मूसा (عليه السلام) की दुआ से ज़िन्दा हुए), फिर उन्होंने बछड़े को (अपना मा'बूद) बना लिया, इसके बाद कि उनके पास (हक़ की निशान दही करने वाली) वाज़ेह निशानियां आ चुकी थीं, फिर हमने उस (जुर्म) से भी दरगुज़र किया, और हमने मूसा (عليه السلام)को (उन पर) वाज़ेह ग़ल्बा अ़ता फ़रमाया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

154. और (जब यहूद तौरात के अहकाम से फिर इन्कारी हो गए तो) हमने उनसे (पुख़्ता) अ़हद लेने के लिए (कोहे) तूर को उनके ऊपर उठा (कर मुअ़ल्लक़ कर) दिया, और हमने उनसे फ़रमाया कि तुम (इस शहर के) दरवाज़े (या'नी बाबे ईलियाअ) में सज्दऐ (शुक्र) करते हुऐ दाख़िल होना, और हमने उनसे (मज़ीद) फ़रमाया कि हफ़्ते के दिन (मछली के शिकार की मुमानिअ़त के हुक्म) में भी तजावुज़ न करना, और हमने उनसे बड़ा ताकीदी अ़हद लिया था।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ط بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾

155. पस (उन्हें जो सज़ाऐं मिलीं वोह) उनकी अपनी अ़हद शिकनी पर और आयाते इलाही से इन्कार (के सबब) और अंबिया को उनके ना हक़ क़त्ल कर डालने (के बाइस) नीज़ उनकी उस बात (के सबब) से कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ (चढ़े हुए) हैं, हक़ीक़त में ऐसा न था) बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के बाइस उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, सो वोह चंद एक के सिवा ईमान नहीं लाएंगे।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾

156. और (मज़ीद येह कि) उनके (उस) कुफ़्र और क़ौल के बाइस जो उन्हों ने मरयम (عليها السلام) पर ज़बरदस्त बोहतान लगाया।

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى

157. और उनके इस केहने (या'नी फ़ख़्रिया दा'वे) की

ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ
وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَ
اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ
مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ﴿۱۵۷﴾

वजह से (भी)कि हमने अल्लाह के रसूल, मरयम के बेटे ईसा मसीह़ को क़त्ल कर डाला है, हालांकि उन्हों ने न उनको क़त्ल किया और न उन्हें सूली चढ़ाया मगर (हुआ येह कि) उनके लिए (किसी को ईसा (عليه السلام) का) हम शक्ल बना दिया गया, और बेशक जो लोग उनके बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं वोह यक़ीनन उस (क़त्ल के ह़वाले) से शक में पड़े हुए हैं, उन्हें (ह़क़ीक़ते हाल का) कुछ भी इल्म नहीं मगर येह कि गुमान की पैरवी (कर रहे हैं), और उन्होंने ईसा (عليه السلام) को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾

158. बल्कि अल्लाहने उन्हें अपनी तरफ़ (आस्मान पर) उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मतवाला है।

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا
لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ﴿۱۵۹﴾

159. और (क़ुर्बे क़ियामत नुज़ूले मसीह़ (عليه السلام) के वक़्त) अहले किताब में से कोई (फ़र्द या फ़िरक़ा) न रहेगा मगर वोह ईसा (عليه السلام) पर उनकी मौत से पहले ज़रूर(सह़ीह़ तरीक़ेसे) ईमान ले आएगा, और क़ियामत के दिन ईसा (عليه السلام) उन पर गवाह होंगे।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا
عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ
بِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۙ﴿۱۶۰﴾
وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ
وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾

160. फिर यहूदियों के ज़ुल्म ही की वजह से हमने उन पर (कई) पाकीज़ा चीज़ें ह़राम कर दीं जो (पहले) उनके लिए ह़लाल की जा चुकी थीं, और इस वजह से (भी) कि वोह (लोगों को) अल्लाह की राह से बकसरत रोकते थे।

161. और उनके सूद लेने के सबब से, हालांकि वोह उससे रोके गए थे, और उनके लोगों का ना ह़क़ माल खाने की वजहसे (भी उन्हें सज़ा मिली), और हमने उनमें से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَ مَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ
وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَ الْمُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا
عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾

162. लेकिन उनमें से पुख़्ता इल्मवाले और मो'मिन लोग इस (वह़ी) पर जो आपकी तरफ़ नाज़िल की गई है और उस (वह़ी) पर जो आपसे पहले नाज़िल की गई (बराबर) ईमान लाते हैं और वोह (कितने अच्छे हैं कि) नमाज़ क़ाइम करने वाले (हैं) और ज़कात देनेवाले (हैं) और अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले (हैं)। ऐसे ही लोगों को हम अ़नक़रीब बड़ा अज्र अ़ता फ़रमाएंगे।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ
اِلٰى نُوْحٍ وَّ النَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَ
عِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَ يُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ
وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾

163. (ऐ ह़बीब!) बेशक हमने आपकी तरफ़ (उसी तरह) वह़ी भेजी है जैसे हमने नूह़ (عليه السلام)की तरफ़ और उनके बाद (दूसरे) पयग़म्बरों की तरफ़ भेजी थी। और हमने इब्राहीम व इस्माईल और इस्ह़ाक़ व या'क़ूब और (उनकी) अवलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान (عليهم السلام) की तरफ़ (भी) वह़ी फ़रमाई, और हमने दाऊद (عليه السلام)को (भी) ज़बूर अ़ता की थी।

وَ رُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ
مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ
عَلَيْكَ ؕ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى
تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾

164. और (हमने कई) ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिनके ह़ालात हम (इससे) पहले आपको सुना चुके हैं और (कई) ऐसे रसूल भी (भेजे) हैं जिनके ह़ालात हमने (अभी तक) आपको नहीं सुनाए, और अल्लाहने मूसा (عليه السلام) से (बिलावास्ता) गुफ़्तुगू (भी) फ़रमाई।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا
يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ
الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾

165. रसूल जो ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले थे (इस लिए भेजे गए) ताकि (उन) पयग़म्बरों (के आ जाने) के बाद लोगों के लिए अल्लाह पर कोई उ़ज़्र बाक़ी न रहे, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब ह़िक्मतवाला है।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿۱۶۶﴾

166. (ऐ ह़बीब! कोई आपकी नुबुव्वत पर ईमान लाए या न लाए) मगर अल्लाह (ख़ुद इस बात की) गवाही देता है कि जो कुछ उसने आपकी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है उसे अपने इ़ल्म से नाज़िल फ़रमाया है, और फ़रिश्ते (भी आपकी ख़ातिर) गवाही देते हैं और अल्लाह का गवाह होना (ही) काफ़ी है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿۱۶۷﴾

167. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया (या'नी नुबुव्वते मुह़म्मदी ﷺ की तकज़ीब की) और (लोगों को) अल्लाह की राहसे रोका, यक़ीनन वोह (ह़क़ से) बहुत दूर की गुमराही में जा भटके।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿۱۶۸﴾ۙ

168. बेशक जिन्हों ने (अल्लाह की गवाही को न मान कर) कुफ़्र किया और (रसूल ﷺ की शान को न मान कर) ज़ुल्म किया, अल्लाह हरगिज़ (ऐसा) नहीं कि उन्हें बख़्श दे और न (ऐसा है कि आख़िरत में) उन्हें कोई रास्ता दिखाए।

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۱۶۹﴾

169. सिवाए जहन्नम के रास्ते के जिसमें वोह हमेशा हमेशा रहेंगे, और येह काम अल्लाह पर आसान है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷۰﴾

170. ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारे पास येह रसूल (ﷺ) तुम्हारे रब की तरफ़से ह़क़ के साथ तशरीफ़ लाया है, सो तुम (उन पर) अपनी बेहतरी के लिए ईमान ले आओ और अगर तुम कुफ़्र (या'नी उनकी रिसालत से इन्कार) करोगे तो (जान लो वोह तुम से बेनियाज़ है क्योंकि) जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है यक़ीनन (वोह सब) अल्लाह ही का है, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी ह़िक्मतवालाहै।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ

171. ऐ अह्ले किताब! तुम अपने दीन में ह़दसे ज़ाइद न बढ़ो और अल्लाह की शान में सच के सिवा कुछ न कहो।

إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
رَسُولُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ أَلْقٰهَآ إِلٰى
مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوا بِاللّٰهِ وَ
رُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُولُوا ثَلٰثَةٌ ؕ
اِنْتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ إِنَّمَا اللّٰهُ إِلٰهٌ
وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ أَنْ يَّكُونَ لَهٗ
وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾
لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ اَنْ يَّكُونَ
عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ؕ
وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ
يَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيعًا ﴿١٧٢﴾
فَاَمَّا الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ اُجُورَهُمْ وَ
يَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِينَ
اسْتَنْكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا اَلِيمًا ۙ وَّلَا يَجِدُونَ لَهُمْ
مِّنْ دُونِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُورًا

وقف لازم — ع ٢٣ ٣

हक़ीक़त सिर्फ़ येह है कि मसीह़ ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) अल्लाह का रसूल और उसका कलिमा है जिसे उसने मरयम की तरफ़ पहुंचा दिया और उस (की तरफ़) से एक रूह़ है। पस तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और मत कहो कि (मा'बूद) तीन हैं, (इस अक़ीदे से) बाज़ आ जाओ, (येह) तुम्हारे लिए बेहतर है, बेशक अल्लाह ही यक्ता मा'बूद है, वोह इस से पाक है कि उसके लिए कोई अवलाद हो, (सब कुछ) उसीका है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है, और अल्लाह का कारसाज़ होना काफ़ी है।

172. मसीह़ (عليه السلام) इस (बात) से हरगिज़ आ़र नहीं रखता कि वोह अल्लाह का बंदा हो और न ही मुक़र्रब फ़रिश्तों को (उससे कोई आ़र है), और जो कोई उसकी बंदगी से आ़र मह़सूस करे और तकब्बुर करे तो वोह ऐसे तमाम लोगों को अ़नक़रीब अपने पास जमा' फ़रमाएगा।

173. पस जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वोह उन्हें पूरे पूरे अज्र अ़ता फ़रमाएगा और (फिर) अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़ियादा देगा, और वोह लोग जिन्हों ने (अल्लाह की इबादत से) आ़र मह़सूस की और तकब्बुर किया तो वोह उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा, और वोह अपने लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त पाएंगे और न कोई मददगार।

174. ऐ लोगो! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी जानिब से (ज़ाते मुहम्मदी ﷺ की सूरतमें ज़ाते ह़क़्क़ जल

مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾

मजदहू की सबसे ज़ियादा मज़बूत, कामिल और वाज़ेह) दलीले कातेअ़ आ गई है और हमने तुम्हारी तरफ़ (उसीके साथ कुर्आन की सूरत में) वाज़ेह़ और रौशन नूर (भी) उतार दिया है।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾ ؕ

175. पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उस (के दामन) को मज़बूती से पकड़े रखा तो अ़नक़रीब (अल्लाह) उन्हें अपनी (ख़ास) रह़मत और फ़ज़्ल में दाख़िल फ़रमाएगा, और उन्हें अपनी तरफ़ (पहुंचने का) सीधा रास्ता दिखाएगा।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ ع ٢٤ ٥ ٤

176. लोग आपसे फ़तवा (या'नी शरई हुक्म) दरयाफ़्त करते हैं। फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तुम्हें (बिग़ैर अवलाद और बिग़ैर वालिदैन के फ़ौत होने वाले) कलालह (की विरासत) के बारे में हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा शख़्स फ़ौत हो जाए जो बे अवलाद हो मगर उसकी एक बहन हो तो उसके लिए उस (माल) का आधा (ह़िस्सा) है जो उसने छोड़ा है, और (अगर उसके बर अ़क्स बहन कलालह हो तो उसके मरने की सूरत में उसका) भाई उस (बहन) का वारिस (कामिल) होगा अगर उस (बहन) की कोई अवलाद न हो, फिर अगर (कलालह भाई की मौत पर) दो (बहनें वारिस) हों तो उनके लिए उस (माल) का दो तिहाई (ह़िस्सा) है जो उसने छोड़ा है, और अगर (बसूरते कलालह मर्ह़ूम के) चंद भाई बहन मर्द (भी) और औ़रतें (भी वारिस) हों तो फिर (हर) एक मर्द का (ह़िस्सा) दो औ़रतों के ह़िस्से के बराबर होगा, (येह अह़काम) अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान फ़रमा रहा है ताकि तुम भटकते न फिरो, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

आयातुहा 120 | 5 सूरतुल माइदह म-दनिय्यतुन 112 | रुकूआ़तुहा 16

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ①

1. ऐ ईमान वालो! (अपने) अ़हद पूरे करो। तुम्हारे लिए चौपाए जानवर (या'नी मवेशी) ह़लाल कर दिए गए (हैं) सिवाए उन (जानवरों) के जिनका बयान तुम पर आइन्दह किया जाएगा (लेकिन) जब तुम एह़राम की ह़ालत में हो, शिकार को ह़लाल न समझना। बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَآ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ②

2. ऐ ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों की बेह़ुरमती न करो और न ह़ुरमत (व अदब) वाले महीने की (या'नी ज़िल क़ा'दह, ज़िल ह़िज्जा, मुह़र्रम और रज्जब में से किसी माह की) और न ह़रमे का'बा को भेजे हुऐ क़ुर्बानी के जानवरों की और न मक्का लाए जानेवाले उन जानवरों की जिन के गले में अ़लामती पट्टे हों और न ह़ुरमत वाले घर (या'नी ख़ानए का'बा) का क़स्द कर के आने वालों (के जानो माल और इ़ज़्ज़तो आबरू) की (बेह़ुरमती करो क्योंकि येह वोह लोग हैं) जो अपने रब का फ़ज़्ल और रज़ा तलाश कर रहे हैं, और जब तुम ह़ालते एह़राम से बाहर निकल आओ तो तुम शिकार कर सक्ते हो, और तुम्हें किसी क़ौम की (येह) दुश्मनी कि उन्हों ने तुमको मस्जिदे ह़राम (या'नी ख़ानए का'बा की ह़ाज़िरी) से रोका था इस बात पर हरगिज़ न उभारे कि तुम (उनके साथ) ज़ियादती करो और नेकी और परहेज़गारी (के कामों) पर एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म (के कामों) पर एक दूसरे की मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह (ना फ़रमानी करनेवालों को) सख़्त सज़ा देने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَ
لَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ
بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَ
الْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ
السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ
عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا
بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ
يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ
اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ
الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ
مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣

3. तुम पर मुर्दार (या'नी बिग़ैर शरई ज़ब्ह के मरने वाला जानवर)ह़राम कर दिया गया है और (बहाया हुआ)ख़ून और सुव्वर का गोश्त और वोह (जानवर) जिस पर ज़ब्ह के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम पुकारा गया हो और गला घुट कर मरा हुआ (जानवर) और (धारदार आले के बिगैर किसी चीज़ की) ज़र्ब से मरा हुआ और ऊपर से गिर कर मरा हुआ और (किसी जानवर के)सींग मारने से मरा हुआ और वोह (जानवर) जिसे दरिन्दे ने फाड़ खाया हो सिवाए उसके जिसे (मरने से पहले) तुमने ज़ब्ह कर लिया, और (वोह जानवर भी ह़राम है) जो बातिल मा'बूदों के थानों (या'नी बुतों के लिए मख़्सूस की गई क़ुरबानगाहों) पर ज़ब्ह किया गया हो और येह (भी ह़राम है)कि तुम पांसों (या'नी फ़ाल के तीरों) के ज़रीए क़िस्मत का ह़ाल मा'लूम करो (या हिस्से तक़्सीम करो), येह सब काम गुनाह हैं। आज काफ़िर लोग तुम्हारे दीन (के ग़ालिब आ जाने के बाइ़स अपने नापाक इरादों) से मायूस हो गए, सो (ऐ मुसलमानो!) तुम उनसे मत डरो और मुझ ही से डरा करो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को (बतौरे) दीन (या'नी मुकम्मल निज़ामे ह़यात की हैसिय्यत से) पसंद कर लिया। फिर अगर कोई शख़्स भूक (और प्यास) की शिद्दत में इज़्तिरारी (या'नी इन्तिहाई मजबूरी की) ह़ालत को पहुंच जाए (इस शर्त के साथ) के गुनाह की तरफ़ माइल होनेवाला न हो (या'नी ह़राम चीज़ गुनाह की रग़बत के बाइ़स न खाए) तो बेशक अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ
اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ

4. लोग आपसे सवाल करते हैं कि उनके लिए क्या चीज़ें ह़लाल की गई हैं, आप (उनसे) फ़रमा दें कि तुम्हारे लिए

الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَ اذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝۴

पाक चीज़ें ह़लाल कर दी गई हैं और वोह शिकारी जानवर जिन्हें तुमने शिकार पर दौड़ाते हुए यूं सिधार लिया है कि तुम उन्हें (शिकार के वोह तरीक़े) सिखाते हो जो तुम्हें अल्लाह ने सिखाए हैं सो तुम उस (शिकार) में से (भी) खाओ जो वोह (शिकारी जानवर) तुम्हारे लिए मार कर रोक रखें और (शिकार पर छोड़ते वक़्त) उस (शिकारी जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह हिसाब में जल्दी फ़रमानेवाला है।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَ لَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝۵ ع

5. आज तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें ह़लाल कर दी गईं, और उन लोगों का ज़बीह़ा (भी) जिन्हें (इल्हामी) किताब दी गई तुम्हारे लिए ह़लाल है और तुम्हारा ज़बीह़ा उनके लिए ह़लाल है, और (इसी तरह) पाक दामन मुसलमान औ़रतें और उन लोगों में से पाकदामन औ़रतें जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई थी (तुम्हारे लिए ह़लाल हैं) जब कि तुम उन्हें उनका महर अदा कर दो, (मगर शर्त) येह कि तुम (उन्हें) क़ैदे निकाह में लाने वाले (इफ़्फ़त शिआ़र) बनो न कि (मह़ज़ ह़वस रानी की ख़ातिर) ए'लानिया बदकारी करने वाले और न ख़ुफ़्या आशनाई करने वाले, और जो शख़्स (अह़कामे इलाही पर) ईमान (लाने) से इन्कार करे तो उसका सारा अ़मल बरबाद हो गया और वोह आख़िरत में (भी) नुक़्सान उठानेवालों में से होगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَ امْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَ اِنْ كُنْتُمْ

6. ऐ ईमानवालो! जब (तुम्हारा) नमाज़ के लिए खड़े (होने का इरादा) हो तो (वुज़ू के लिए) अपने चेहरों को और अपने हाथों को कोहनियों समेत धो लो और अपने सरों का मसह करो और अपने पाँव (भी) टख़्नों समेत (धो लो), और अगर तुम ह़ालते जनाबत में हो तो (नहा कर) ख़ूब पाक हो जाओ और अगर तुम बीमार हो या

جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ
مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ
تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ
مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ
حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَ لِيُتِمَّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦

सफ़र में हो या तुमसे कोई रफ़ूए ह़ाजत से (फ़ारिग हो कर) आया हो या तुमने औरतों से क़ुर्बत (मुजामेअ़त) की हो फिर तुम पानी न पाओ तो (अंदरीं सूरत) पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो। पस (तयम्मुम येह है कि) उस (पाक मिट्टी) से अपने चेहरों और अपने (पूरे) हाथों का मसह़ कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि वोह तुम्हारे ऊपर किसी क़िस्म की सख़्ती करे लेकिन वोह (येह) चाहता है कि तुम्हें पाक कर दे और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दे ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

وَ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ
مِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ
قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۫ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

7. और अल्लाह की (उस) ने'मत को याद करो जो तुम पर (की गई) है और उस के अ़हद को (भी याद करो) जो उसने तुमसे (पुख़्ता तरीक़े से) लिया था जब के तुमने (इक़रारन) कहा था कि हमने (अल्लाह के ह़ुक्म को) सुना और हमने (उस की) इताअ़त की और अल्लाह से डरते रहो! बेशक अल्लाह सीनों की (पोशीदह) बातों को ख़ूब जानता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا
قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَ
لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا
تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ
لِلتَّقْوٰى ۫ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨

8. ऐ ईमानवालो! अल्लाह के लिए मज़बूती से क़ाइम रेहते हुऐ इन्साफ़ पर मब्नी गवाही देनेवाले हो जाओ और किसी क़ौम की सख़्त दुश्मनी (भी) तुम्हें इस बात पर बर अंगेख़्ता न करे कि तुम (उससे) अ़द्ल न करो। अ़द्ल किया करो (कि) वोह परहेज़गारी से नज़दीक तर है, और अल्लाह से डरा करो। बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़ूब आगाह है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ

9. अल्लाह ने ऐसे लोगों से जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वा'दा फ़रमाया है (कि) उनके लिए बख़्शिश

عَظِيْمٌ ﴿٩﴾

और बड़ा अज्र है।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٠﴾

10. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वोही लोग दोज़ख़ (में जलने) वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ ع ٢ ٦ ٦

11. ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाह के (उस) इनआ़म को याद करो (जो) तुम पर हुआ जब क़ौमे (कुफ़्फ़ार)ने येह इरादा किया कि अपने हाथ (क़त्लो हलाकत के लिए) तुम्हारी तरफ़ दराज़ करें तो अल्लाहने उनके हाथ तुमसे रोक दिए और अल्लाह से डरते रहो, और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَىْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَ اَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ لَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾

12. और बेशक अल्लाहने बनी इसराईल से पुख़्ता अ़हद लिया और (उसकी ता'मील, तन्फ़ीज़ और निगेहबानी के लिए) हमने उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किए, और अल्लाहने (बनी इसराईल से) फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूं (या'नी मेरी ख़ुसूसी मददो नुसरत तुम्हारे साथ रहेगी), अगर तुमने नमाज़ क़ाइम रखी और तुम ज़कात देते रहे और मेरे रसूलों पर (हमेशा) ईमान लाते रहे और उनके (पयग़म्बराना मिशन)की मदद करते रहे और अल्लाह को (उसके दीनकी ह़िमायतो नुसरत में माल ख़र्च कर के) क़र्जे ह़सन देते रहे तो मैं तुम से तुम्हारे गुनाहों को ज़रूर मिटा दूंगा और तुम्हें यक़ीनन ऐसी जन्नतों में दाख़िल कर दूंगा जिन के नीचे नेहरें जारी हैं। फिर उसके बाद तुम में से जिसने (भी) कुफ़्र (या'नी अ़हद से इन्ह़िराफ़) किया तो बेशक वोह सीधी राह से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَ

13. फिर उन की अपनी अ़हद शिक्नी की वजह से हमने

جَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ
الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا
مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ
عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا
مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳﴾

उन पर ला'नत की (या'नी वोह हमारी रह़मत से मह़रूम हो गए), और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया (या'नी वोह हिदायत और असर पज़ीरी से मह़रूम हो गए, चुनान्चे) वोह लोग (किताबे इलाही के) कलिमात को उनके (सह़ीह़) मुक़ामात से बदल देते हैं और उस (रहनुमाई) का एक (बड़ा) ह़िस्सा भूल गए हैं जिस की उन्हें नसीह़त की गई थी, और आप हमेशा उनकी किसी न किसी ख़यानत पर मुत्तला' होते रहेंगे सिवाए उनमें से चन्द एक के (जो ईमान ला चुके हैं) सो आप उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दीजिए और दर गुज़र फ़रमाइये, बेशक अल्लाह एह़सान करनेवालों को पसन्द फ़रमाता है।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى
اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا
ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا
كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۴﴾

14. और हमने उन लोगों से (भी इसी क़िस्म का) अ़हद लिया था जो केहते हैं हम नसारा हैं, फिर वोह (भी) उस (रहनुमाई) का एक (बड़ा) ह़िस्सा फ़रामोश कर बैठे जिस की उन्हें नसीह़त की गई थी। सो (इस बद अ़हदी के बाइ़स) हमने उनके दरमियान दुश्मनी और कीना रोज़े क़ियामत तक डाल दिया, और अ़न क़रीब अल्लाह उन्हें उन (आ'माल की ह़क़ीक़त) से आगाह फ़रमा देगा जो वोह करते रेहते थे।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ
مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ
قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ
مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾

15. ऐ अहले किताब! बेशक तुम्हारे पास हमारे (येह) रसूल (ﷺ) तशरीफ़ लाए हैं जो तुम्हारे लिए बहुत सी ऐसी बातें (वाज़ेह़ तौर पर) ज़ाहिर फ़रमाते हैं जो तुम किताबमें से छुपाए रखते थे और (तुम्हारी) बहुत सी बातों से दरगुज़र (भी) फ़रमाते हैं। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर (या'नी ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ) आ गया है और एक रौशन किताब (या'नी क़ुर्आने मजीद)।

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ

16. अल्लाह इसके ज़रीए उन लोगों को जो उसकी रज़ा के

سُبُلَ السَّلٰمِ وَ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ
الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ
يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ
اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ
وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ
وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَ
اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَ النَّصٰرٰى نَحْنُ
اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ
مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۫
وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ

पैरव हैं, सलामती की राहों की हिदायत फ़रमाता है और उन्हें अपने हुक्म से (कुफ़्रो जहालत की) तारीकियों से निकाल कर (ईमानो हिदायत की) रौशनी की तरफ़ ले जाता है और उन्हें सीधी राह की सम्त हिदायत फ़रमाता है।

17. बेशक उन लोगों ने कुफ़्र किया जो केहते हैं कि यक़ीनन अल्लाह मसीह इब्ने मरयम ही (तो) है, आप फ़रमा दें : फिर कौन (ऐसा शख़्स) है जो अल्लाह (की मशिय्यतमें) से किसी शय का मालिक हो? अगर वोह इस बात का इरादा फ़रमा ले कि मसीह इब्ने मरयम और उसकी मां और सब ज़मीनवालों को हलाक फ़रमा देगा (तो उसके फ़ैसले के ख़िलाफ़ उन्हें कौन बचा सक्ता है?) और आस्मानों और ज़मीन और जो (काइनात) इन दोनों के दरम्यान है (सब) की बादशाही अल्लाह ही के लिए है। वोह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

18. और यहूद और नसाराने कहा : हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं। आप फ़रमा दीजिए (अगर तुम्हारी बात दुरुस्त है) तो वोह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें अज़ाब क्यों देता है? बल्कि (हक़ीक़त येह है कि) जिन (मख़्लूक़ात) को अल्लाहने पैदा किया है तुम (भी) उन (ही) में से बशर हो (या'नी दीगर तब्क़ाते इन्सानी ही की मानिन्द हो), वोह जिसे चाहे बख़्शिश से नवाज़ता है और जिसे चाहे अज़ाब से दो चार करता है, और आस्मानों और ज़मीन और वोह (काइनात) जो दोनों के दरम्यान है (सब) की बादशाही अल्लाह ही के लिए है और (हर एक को) उसी की तरफ़ पलट कर जाना है।

19. ऐ अहले किताब! बेशक तुम्हारे पास हमारे (येह आख़िरुज़्ज़मां) रसूल (ﷺ) पयग़म्बरों की आमद (के

اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّ
لَا نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّ
نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ ع

सिलसिले) के मुन्क़ता' होने (के मौक़े) पर तशरीफ़ लाए हैं, जो तुम्हारे लिए (हमारे अह्काम) ख़ूब वाज़ेह करते हैं, (इस लिए) कि तुम (उज़्र करते हुए येह) केह दोगे कि हमारे पास न (तो) कोई ख़ुशख़बरी सुनानेवाला आया है और न डर सुनाने वाला। (अब तुम्हारा येह उज़्र भी ख़त्म हो चुका है क्योंकि) बिला शुब्हा तुम्हारे पास (आख़िरी) ख़ुशख़बरी सुनाने और डर सुनानेवाला (भी) आ गया है, और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ
اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ
جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَ جَعَلَكُمْ
مُّلُوْكًا ۖۗ وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ
اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾

20. और (वोह वक़्त भी याद करें) जब मूसा (عليه السلام)ने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम! तुम अपने ऊपर (किया गया) अल्लाह का वोह इनआम याद करो जब उसने तुममें अंबिया पैदा फ़रमाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वोह (कुछ) अ़ता फ़रमाया जो (तुम्हारे ज़माने में) तमाम जहानों में से किसी को नहीं दिया था।

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ
الَّتِیْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَرْتَدُّوْا
عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۱﴾

21. ऐ मेरी क़ौम! (मुल्के शाम या बयतुल मुक़द्दस की) उस मुक़द्दस सर ज़मीनमें दाख़िल हो जाओ जो अल्लाहने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पुश्त पर (पीछे) न पलटना वरना तुम नुक़्सान उठाने वाले बन कर पलटोगे।

قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا
جَبَّارِيْنَ ۖۗ وَ اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى
يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا
فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾

22. उन्हों ने (जवाबन) कहा : ऐ मूसा! इसमें तो ज़बरदस्त (ज़ालिम) लोग (रेहते) हैं और हम इसमें हरगिज़ दाख़िल नहीं होंगे यहां तक कि वोह उस (ज़मीन) से निकल जाएं, पस अगर वोह यहां से निकल जाएं तो हम ज़रूर दाख़िल हो जाएंगे।

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ
اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ

23. उन (चंद) लोगोंमें से जो (अल्लाह से) डरते थे दो (ऐसे) शख़्स बोल उठे जिन पर अल्लाहने इनआ़म फ़रमाया

الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ
غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾

था (अपनी क़ौमसे केहने लगेः) तुम उन लोगों पर (बिला ख़ौफ़ ह़मला करते हुऐ शहर के) दरवाज़े से दाख़िल हो जाओ, सो जब तुम उस (दरवाज़े) में दाख़िल हो जाओगे तो यक़ीनन तुम ग़ालिब हो जाओगे, और अल्लाह ही पर तवक्कल करो बशर्ते कि तुम ईमानवाले हो।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا
مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ
فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. उन्होंने कहा : ऐ मूसा! जब तक वोह लोग उस (सर ज़मीन)में हैं हम हरगिज़ कभी भी वहां दाख़िल नहीं होंगे, पस तुम जाओ और तुम्हारा रब (साथ जाए) सो तुम दोनों (ही उनसे) जंग करो, हम तो यहीं बैठे हैं।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا
نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ
الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

25. (मूसा عليه السلام ने) अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब! मैं अपनी ज़ात और अपने भाई (हारून عليه السلام)के सिवा (किसी पर) इख़्तियार नहीं रखता पस तू हमारे और (उस) ना फ़रमान क़ौम के दरमियान (अपने हुक्म से) जुदाई फ़रमा दे।

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ
اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي
الْاَرْضِ ۗ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع ٤ ٨

26. (रबने) फ़रमाया : पस येह (सर ज़मीन) उन (नाफ़रमान) लोगों पर चालीस साल तक ह़राम कर दी गई है, येह लोग ज़मीनमें (परेशान ह़ाल) सर गर्दां फिरते रहेंगे, सो (ऐ मूसा! अब) उस ना फ़रमान क़ौम (के इब्रतनाक ह़ाल) पर अफ़्सोस न करना।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ
بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ
مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ
الْاٰخَرِ ۗ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۗ قَالَ
اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾

وقف لازم

النصف

27. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम !) आप उन लोगों को आदम (عليه السلام) के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) की ख़बर सुनाएं जो बिल्कुल सच्ची है। जब दोनोंने (अल्लाहके हुजूर एक एक कुरबानी पेश की सो उनमें से एक (हाबील) की कुबूल कर ली गई और दूसरे (क़ाबील) से कुबूल न की गई, तो उस (क़ाबील) ने (हाबील से ह़सदन व इन्तिक़ामन) कहा : मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। उस (हाबील) ने (जवाबन) कहा : बेशक अल्लाह परहेज़गारों से ही (नियाज़) कुबूल फ़रमाता है।

لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَیَّ یَدَكَ لِتَقْتُلَنِیْ مَاۤ
اَنَا بِبَاسِطٍ یَّدِیَ اِلَیْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ
اِنِّیْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۲۸﴾

28. अगर तू अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए मेरी तरफ़ बढ़ाएगा (तो फिर भी) मैं अपना हाथ तुझे क़त्ल करने के लिए तेरी तरफ़ नहीं बढ़ाऊंगा क्योंकि मैं अल्लाह से डरता हूं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِیْ وَ
اِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ
وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۹﴾ ۚ

29. मैं चाहता हूं (कि मुझसे कोई ज़ियादती न हो और) मेरा गुनाहे (क़त्ल) और तेरा अपना (साबिक़ा) गुनाह (जिसके बाइस तेरी क़ुरबानी ना मंजूर हुई सब) तूही हासिल कर ले फिर तू अहले जहन्नम में से हो जाएगा और येही ज़ालिमों की सज़ा है।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِیْهِ
فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۳۰﴾

30. फिर उस (क़ाबील)के नफ़्सने उसके लिए अपने भाई (हाबील) का क़त्ल आसान (और मरग़ूब) कर दिखाया । सो उसने उसको क़त्ल कर दिया। पस वोह नुक़्सान उठानेवालों में से हो गया।

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا یَّبْحَثُ فِی
الْاَرْضِ لِیُرِیَهٗ كَیْفَ یُوَارِیْ
سَوْءَةَ اَخِیْهِ ؕ قَالَ یٰوَیْلَتٰۤی
اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا
الْغُرَابِ فَاُوَارِیَ سَوْءَةَ اَخِیْ ۚ
فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ ۚۙ

31. फिर अल्लाहने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन कुरेदने लगा ताकि उसे दिखाए कि वोह अपने भाई की लाश किस तरह छुपाए,(येह देख कर) उसने कहा : हाय अफ़्सोस! क्या मैं इस कव्वे की मानिन्द भी न हो सका कि अपने भाई की लाश छुपा देता, सो वोह पशेमान होनेवालों में से हो गया।

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰی بَنِیْۤ
اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا
بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ
فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ مَنْ

32. इसी वजहसे हमने बनी इसराईल पर (नाज़िल की गई तौरातमें येह हुक्म) लिख दिया (था)कि जिसने किसी शख़्स को बिग़ैर क़िसास के या ज़मीनमें फ़साद (फ़ैलाने या'नी ख़ूनरेज़ी और डाकाज़नी वग़ैरा की सज़ा) के (बिग़ैर ना हक़्क़) क़त्ल कर दिया तो गोया उसने (मुआ़शरे के) तमाम लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने उसे

اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَ لَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ۫ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿۳۲﴾

(ना हक़ मरने से बचा कर) ज़िन्दा रखा तो गोया उसने (मुआशरे के) तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (या'नी उसने हयाते इन्सानी का इज्तिमाई निज़ाम बचा लिया), और बेशक उनके पास हमारे रसूल वाज़ेह निशानियां ले कर आए फिर (भी) इसके बाद उन में से अक्सर लोग यक़ीनन ज़मीनमें हद से तजावुज़ करनेवाले हैं।

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ يَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ﴿۳۳﴾

33. बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से जंग करते हैं और ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी करते फिरते हैं (या'नी मुसलमानों में ख़ूनरेज़ी, रहज़नी और डाकाज़नी वग़ैरा के मुर्तकिब होते हैं) उनकी सज़ा येही है कि वोह क़त्ल किए जाएं या फांसी दिए जाएं या उनके हाथ और उनके पाँव मुख़ालिफ़ सम्तों से काटे जाएं या (वतन की) ज़मीन (में चलने फिरने) से दूर (या'नी मुल्क बदर या क़ैद) कर दिए जाएं। येह (तो) उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और उनके लिए आख़िरत में (भी) बड़ा अ़ज़ाब है।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۴﴾ ع ۵ ۹

34. मगर जिन लोगोंने, क़ब्ल इसके कि तुम उन पर क़ाबू पा जाओ, तौबा कर ली सो जान लो कि अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. ऐ ईमानवालो ! अल्लाहसे डरते रहो और उस (के हुज़ूर) तक (तक़र्रुब और रसाई का) वसीला तलाश करो और उसकी राहमें जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ

36. बेशक जो लोग कुफ़्रके मुर्तकिब हो रहे हैं अगर उनके पास वोह सब कुछ (मालो मताअ़ और ख़ज़ाना मौजूद) हो जो रूए ज़मीन में है बल्कि उसके साथ इतना और (भी) ताकि वोह रोज़े क़ियामत के अ़ज़ाब से (नजात

الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

के लिए) उसे फ़िदया (या'नी अपनी जानके बदले) में दे दें तो (वोह सब कुछ भी) उनसे क़ुबूल नहीं किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ
وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾

37. वोह चाहेंगे कि (किसी तरह) दोज़ख़ से निकल जाएं जबकि वोह उससे नहीं निकल सकेंगे और उनके लिए दाइमी अ़ज़ाब है।

وَ السَّارِقُ وَ السَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا
اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾

38. और चोरी करनेवाला (मर्द) और चोरी करनेवाली (औ़रत) सो दोनों के हाथ काट दो उस (जुर्म) की पादाश में जो उन्होंने कमाया है । (येह) अल्लाह की तरफ़ से इब्रतनाक सज़ा (है), और अल्लाह बड़ा ग़ालिब है बड़ी हिक्मतवाला है।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ
فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾

39. फिर जो शख़्स अपने (उस)जुल्म के बाद तौबा और इस्लाह़ कर ले तो बेशक अल्लाह उस पर रह़मत के साथ रुजूअ़ फ़रमानेवाला है । यक़ीनन अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾

40. (ऐ इन्सान!) क्या तू नहीं जानता कि आस्मानों और ज़मीन की (सारी) बादशाहत अल्लाह ही के लिए है, वोह जिसे चाहता है अ़ज़ाब देता है और जिसे चाहता है बख़्श देता है, और अल्लाह हर चीज़ पर ख़ूब क़ुदरत रखता है।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ
يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ
قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ

الوقف على الاول اجوز ١٣ مع

41. ऐ रसूल ! वोह लोग आपको रंजीदह ख़ातिर न करें जो कुफ़्रमें तेज़ी (से पेश क़दमी) करते हैं उनमें (एक) वोह (मुनाफ़िक़) हैं जो अपने मुंह से केहते हैं कि हम ईमान लाऐ हालांकि उनके दिल ईमान नहीं लाए, और उनमें (दूसरे) यहूदी हैं (येह) झूटी बातें बनाने के लिए (आपको) ख़ूब सुनते हैं (येह ह़क़ीक़त में) दूसरे लोगों के लिए जासूसी की ख़ातिर) सुननेवाले हैं जो

اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ
الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ
اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ
تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ
فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ
اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا
خِزْىٌ ۖ وَّ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ﴿۴۱﴾

(अभी तक) आपके पास नहीं आए, (येह वोह लोग हैं) जो (अल्लाह के) कलिमात को उनके मवाक़े' (मुक़र्रर होने) के बाद (भी) बदल देते हैं (और) केहते हैं अगर तुम्हें येह (हुक्म जो उनकी पसंद का हो) दिया जाए तो उसे इख़्तियार कर लो और अगर तुम्हें येह (हुक्म) न दिया जाए तो (उससे) ऐह़तिराज़ करो, और अल्लाह जिस शख़्स की गुमराही का इरादा फ़रमा ले तो तुम उस के लिए अल्लाह (के हुक्म को रोकने) का हरगिज़ कोई इख़्तियार नहीं रखते। येही वोह लोग हैं जिनके दिलों को पाक करने का अल्लाहने इरादा (ही) नहीं फ़रमाया। उनके लिए दुनियामें (कुफ़्की) ज़िल्लत है और उनके लिए आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ
فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ
اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ
عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَ اِنْ
حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۴۲﴾

42. (येह लोग) झूटी बातें बनाने के लिए जासूसी करनेवाले हैं (मज़ीद येह कि) ह़राम माल ख़ूब खानेवाले हैं । सो अगर(येह लोग)आपके पास (कोई निज़ाई मुआ़मला ले कर) आएं तो आप (को इख़्तियार है कि) उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमा दें या उनसे गुरेज़ फ़रमा लें, और अगर आप उनसे गुरेज़ (भी) फ़रमा लें तो (तब भी) येह आपको हरगिज़ कोई ज़रर नहीं पहुंचा सक्ते, और अगर आप फ़ैसला फ़रमाएं तो उनके दरमियान (भी) अ़द्ल (ही) से फ़ैसला फ़रमाएं (या'नी उनकी दुश्मनी आ़दिलाना फ़ैसले में रुकावट न बने), बेशक अल्लाह अ़द्ल करने वालों को पसंद फ़रमाता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَ عِنْدَهُمُ
التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ
يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَ مَآ

43. और येह लोग आपको क्यों कर ह़ाकिम मान सक्ते हैं दर आं हाली कि उनके पास तौरात (मौजूद) है जिस में अल्लाह का हुक्म (मज़कूर) है। फिर येह उसके बाद (भी ह़क़ से) रूगर्दानी करते हैं, और वोह लोग (बिल्कुल)

ع ٦ ١٠

أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ ع

ईमान लानेवाले नहीं हैं।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّ
نُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ
اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ
وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ
كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ
فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا
تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِیْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ
لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. बेशक हमने तौरात नाज़िल फ़रमाई जिसमें हिदायत और नूर था। उसके मुताबिक़ अंबिया जो (अल्लाह के) फ़रमां बर्दार (बंदे) थे यहूदियों को हुक्म देते रहे और अल्लाहवाले (या'नी उनके अवलिया) और उ़लमा (भी उसी के मुताबिक़ फ़ैसले करते रहे), इस वजह से कि वोह अल्लाहकी किताब के मुहाफ़िज़ बनाए गए थे और वोह उस पर निगहबान (व गवाह) थे। पस तुम (इक़ामते दीन और अह़कामे इलाही के निफ़ाज़ के मुआमले में) लोगों से मत डरो और (सिर्फ़) मुझ से डरा करो और मेरी आयात (या'नी अह़काम) के बदले (दुनिया की) ह़क़ीर क़ीमत न लिया करो, और जो शख़्स अल्लाहके नाज़िल कर्दह हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला (व हुकूमत) न करे, सो वोही लोग काफ़िर हैं।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ
بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَ
الْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ
وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ
فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ
وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. और हमने उस (तौरात) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया था कि जान के बदले जान और आँखके इ़वज़ आँख और नाक के बदले नाक और कान के इ़वज़ कान और दाँत के बदले दाँत और ज़ख़्मों में (भी) बदला है, तो जो शख़्स इस (क़िसास) को सदक़ा (या'नी मुआ़फ़) कर दे तो येह उस (के गुनाहों) के लिए कफ़्फ़ारा होगा, और जो शख़्स अल्लाह के नाज़िल कर्दह हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला (व हुकूमत) न करे सो वही लोग ज़ालिम हैं।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ
مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
التَّوْرٰىةِ ۠ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ

46. और हमने उन (पयग़म्बरों) के पीछे उन (ही) के नुक़ूशे क़दम पर ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) को भेजा जो अपने से पहले की (किताब) तौरात की तस्दीक़ करनेवाले थे और हम ने उनको इन्जील अ़ता की जिस में

هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى
وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾
وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
الْكِتٰبِ وَ مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ
الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً
وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ
اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ
اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ
مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَ اَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

हिदायत और नूर था और (येह इन्जील भी) अपने से पहले की (किताब) तौरात की तस्दीक़ करनेवाली (थी) और (सरासर) हिदायत थी और परहेज़गारों के लिए नसीह़त थी।

47. और अहले इन्जील को (भी) उस (हुक्म) के मुताबिक़ फ़ैसला करना चाहिए जो अल्लाहने उसमें नाज़िल फ़रमाया है, और जो शख़्स अल्लाह के नाज़िल कर्दह हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला (व हुकूमत) न करे सो वोही लोग फ़ासिक़ हैं।

48. और (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) हमने आपकी तरफ़ (भी) सच्चाई के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई है जो अपने से पहले की किताब की तस्दीक़ करनेवाली है और उस (के अस्ल अह़्काम व मज़ामीन) पर निगहबान है, पस आप उनके दरमियान उन (अह़्काम) के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाएं जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाए हैं और आप उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करें उस ह़क़ से दूर हो कर जो आपके पास आ चुका है। हमने तुम में से हर एक के लिए अलग शरीअ़त और कुशादह राहे अ़मल बनाई है, और अगर अल्लाह चाहता तो सबको (एक शरीअ़त पर मुत्तफ़िक़) एक ही उम्मत बना देता लेकिन वोह तुम्हें उन (अलग अलग अह़्काम) में आज़माना चाहता है जो उसने तुम्हें (तुम्हारे ह़स्बे ह़ाल) दिए हैं, सो तुम नेकियों में जलदी करो। अल्लाह ही की तरफ़ तुम सबको पलटना है, फिर वोह तुम्हें उन (सब बातों में ह़क़्को बातिल) से आगाह फ़रमा देगा जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहते थे।

49. और (ऐ ह़बीब! हमने येह हुक्म किया है कि) आप उनके दरमियान उस (फ़रमान) के मुताबिक़ फ़ैसला

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ
بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ
كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿۴۹﴾

फ़रमाएं जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाया है और उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करें और आप उनसे बचते रहें कहीं वोह आप को उन बा'ज़ (अह्कास) से जो अल्लाहने आपकी तरफ़ नाज़िल फ़रमाए हैं फेर (न) दें, फिर अगर वोह (आपके फ़ैसले से) रूगर्दानी करें तो आप जान लें कि बस अल्लाह उनके बा'ज़ गुनाहों के बाइस उन्हें सज़ा देना चाहता है, और लोगों में से अक्सर ना फ़रमान (होते) हैं।

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ
اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع ۷ ۱۱

50. क्या येह लोग (ज़मानए) जाहिलिय्यत का क़ानून चाहते हैं ? और यक़ीन रखनेवाली क़ौम के लिए हुक्म (देने) में अल्लाह से बेहतर कौन हो सक्ता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ
بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ
يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۱﴾

51. ऐ ईमानवालो! यहूद और नसारा को दोस्त मत बनाओ। येह (सब तुम्हारे ख़िलाफ़) आपसमें एक दूसरे के दोस्त हैं, और तुम में से जो शख़्स उन को दोस्त बनाएगा बेशक वोह (भी) उनमें से हो (जाए)गा, यक़ीनन अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى
اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ
اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ
فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِىْۤ
اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ ؕ

52. सो आप ऐसे लोगों को देखेंगे जिनके दिलों में (निफ़ाक़ और ज़ेहनोंमें ग़ुलामी की) बीमारी है कि वोह उन (यहूदो नसारा) में (शामिल होने के लिए) दौड़ते हैं, केहते हैं हमें ख़ौफ़ है कि हम पर कोई गरदिश (न) आ जाए (या'नी उनके साथ मिलने से शायद हमें तह्फ़्फ़ुज़ मिल जाए), तो बईद नहीं कि अल्लाह (वाक़िअ़तन मुसलमानों की) फ़त्ह ले आए या अपनी तरफ़ से कोई अम्र (फ़त्हो कामरानी का निशान बना कर भेज दे) तो येह लोग उस (मुनाफ़िक़ाना सोच) पर जिसे येह अपने दिलों में छुपाए हुऐ हैं शरमिन्दा हो कर रह जाएंगे।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۵۳﴾

53. और (उस वक़्त) ईमानवाले येह कहेंगे क्या येही वोह लोग हैं जिन्होंने बड़े ताकीदी ह़लफ़ (की सूरत) में अल्लाह की क़स्में खाई थीं कि बेशक वोह ज़रूर तुम्हारे (ही) साथ हैं, (मगर) उनके सारे आ'माल अकारत गए सो वोह नुक़्सान उठानेवाले हो गए।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ
مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ
بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ
ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾

54. ऐ ईमानवालो! तुम में से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाएगा तो अ़नक़रीब अल्लाह (उनकी जगह) ऐसी क़ौम को लाएगा जिनसे वोह (खुद) मह़ब्बत फ़रमाता होगा और वोह उससे मह़ब्बत करते होंगे वोह मोमिनों पर नर्म (और) काफ़िरों पर सख़्त होंगे अल्लाह की राह में (ख़ूब) जिहाद करेंगे और किसी मलामत करनेवाले की मलामत से ख़ौफ़ज़दा नहीं होंगे। येह (इन्क़िलाबी किर्दार) अल्लाह का फ़ज़्ल है वोह जिसे चाहता है अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह वुस्अ़तवाला (है) ख़ूब जाननेवाला है।

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾

55. बेशक तुम्हारा (मददगार) दोस्त तो अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) ही है और (साथ) वोह ईमान वाले हैं जो नमाज़ काइम रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वोह (अल्लाह के हुज़ूर आ़जिज़ीसे) झुकने वाले हैं।

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ
الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ ع ۸ ۶ ۱۲

56. और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और ईमानवालों को दोस्त बनाएगा तो (वोही अल्लाह की जमाअ़त है और) अल्लाह की जमाअ़त (के लोग) ही ग़ालिब होनेवाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ

57. ऐ ईमानवालो! ऐसे लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई थी, उनको जो तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बनाए हए हैं और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ,

لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ الْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

और अल्लाह से डरते रहो बशर्ते कि तुम(वाक़ई) साहिबे ईमान हो।

وَ اِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّ لَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. और जब तुम नमाज़ के लिए (लोगों को बसूरते अज़ान) पुकारते हो तो येह (लोग) उसे हँसी और खेल बना लेते हैं। येह इस लिए कि वोह ऐसे लोग हैं जो (बिल्कुल) अ़क़्ल ही नहीं रखते।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَ اَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आप फ़रमा दीजिए, ऐ अह्ले किताब! तुम्हें हमारी कौन सी बात बुरी लगी है बजुज़ इस के कि हम अल्लाह पर और उस (किताब) पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल की गई है और उन (किताबों) पर जो पहले नाज़िल की जा चुकी हैं ईमान लाए हैं और बेशक तुम्हारे अक्सर लोग ना फ़रमान हैं।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَ غَضِبَ عَلَيْهِ وَ جَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَ الْخَنَازِيْرَ وَ عَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾

60. फ़रमा दीजिए : क्या मैं तुम्हें उस शख़्स से आगाह करूं जो सज़ा के ऐ'तिबार से अल्लाह के नज़दीक उससे (भी) बुरा है (जिसे तुम बुरा समझते हो, और येह वोह शख़्स है) जिस पर अल्लाह ने ला'नत की है और उस पर ग़ज़बनाक हुआ है और उसने उन (बुरे लोगों)में से (बा'ज़ को) बन्दर और (बा'ज़ को) सुव्वर बना दिया है, और (येह ऐसा शख़्स है) जिसने शैतान की (इताअ़तो) परस्तिश की है। येही लोग ठिकाने के ऐ'तिबार से बद तरीन और सीधी राह से बहुत ही भटके हए हैं।

وَ اِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَ قَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَ هُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾

61. और जब वोह (मुनाफ़िक़) तुम्हारे पास आते हैं (तो) केहते हैं हम ईमान ले आए हैं हालां कि वोह (तुम्हारी मजलिस में) कुफ़्र के साथ ही दाख़िल हुए और उसी (कुफ़्र) के साथ ही निकल गए, और अल्लाह उन (बातों) को ख़ूब जानता है जिन्हें वोह छुपाए फिरते हैं।

وَ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي
الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और आप उनमें ब कसरत ऐसे लोग देखेंगे जो गुनाह और ज़ुल्म और अपनी ह़राम ख़ोरी में बड़ी तेज़ी से कोशां होते हैं। बेशक वोह जो कुछ कर रहे हैं बहुत बुरा है।

لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ
عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. उन्हें (रूहानी) दुरवेश और (दीनी) उ़लमा उनके क़ौले गुनाह और अक्ले ह़राम से मना' क्यों नहीं करते? बेशक वोह (भी बुराई के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद न कर के) जो कुछ तैयार कर रहे हैं बहुत बुरा है।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ
غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ
بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ
يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا
وَّكُفْرًا ؕ وَ اَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ
اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ
وَ يَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ
وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾

64. और यहूद केहते हैं कि अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है (या'नी मआ़ज़ल्लाह वोह बख़ील है), उनके (अपने) हाथ बांधे जाएं और जो कुछ उन्होंने कहा उसके बाइ़स उन पर ला'नत की गई, बल्कि (ह़क़ येह है कि) उसके दोनों हाथ (जूदो सख़ा के लिए) कुशादह हैं, वोह जिस तरह चाहता है ख़र्च (या'नी बंदों पर अ़ताएं) फ़रमाता है, और (ऐ ह़बीब!) जो (किताब) आपकी तरफ़ आपके रबकी जानिबसे नाज़िल की गई है यक़ीनन उसमें से अक्सर लोगों को (ह़सदन) सरकशी और कुफ़्रमें और बढ़ा देगी, और हमने उनके दरमियान रोज़े क़ियामत तक अ़दावत और बुग़्ज़ डाल दिया है, जब भी येह लोग जंगकी आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है और येह (रूए) ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी करते रहते हैं, और अल्लाह फ़साद करनेवालों को पसंद नहीं करता।

وَ لَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا
وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ
لَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾

65. और अगर अहले किताब (ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ पर) ईमान ले आते और तक़्वा इख़्तियार कर लेते तो हम उन (के दामन)से उनके सारे गुनाह मिटा देते और उन्हें यक़ीनन ने'मत वाली जन्नतों में दाख़िल कर देते।

وَ لَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ

66. और अगर वोह लोग तौरात और इन्जील और जो

وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ
رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ
تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ
مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ
مَا يَعْمَلُوْنَ ؑ ﴿٦٦﴾ ع ٩ ١٣

कुछ (मज़ीद) उनकी तरफ़ उनके रबकी जानिबसे नाज़िल किया गया था (नाफ़िज़ और) क़ाइम कर देते तो (उन्हें माली वसाइल की इस क़दर वुस्अ़त अ़ता हो जाती कि) वोह अपने ऊपरसे (भी) और अपने पाँव के नीचे से (भी) खाते (मगर रिज़्क़ ख़त्म न होता)। उनमें से एक गिरोह मियाना रव (या'नी ए'तिदाल पसंद है), और उनमें से अक्सर लोग जो कुछ कर रहे हैं निहायत ही बुरा है।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا
بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ
مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. ऐ (बर गुज़ीदह) रसूल! जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रबकी जानिब से नाज़िल किया गया है (वोह सारा लोगों को) पहुंचा दीजिए, और अगर आपने (ऐसा) न किया तो आपने उस (रब) का पयग़ाम पहुंचाया ही नहीं, और अल्लाह (मुख़ालिफ़) लोगों से आप (की जान) की (ख़ुद) हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। बेशक अल्लाह काफ़िरों को राहे हिदायत नहीं दिखाता।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ
حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَ
مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ
لَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ
فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. फ़रमा दीजिए : ऐ अहले किताब! तुम (दीन में से) किसी शय पर भी नहीं हो, यहां तक कि तुम तौरात और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रबकी जानिबसे नाज़िल किया गया है (नाफ़िज़ और) क़ाइम कर दो, और (ऐ हबीब!) जो (किताब) आपकी तरफ़ आपके रब की जानिब से नाज़िल की गई है यक़ीनन उनमें से अक्सर लोगों को (हसदन) सरकशी और कुफ़्रमें बढ़ा देगी, सो आप गिरोहे कुफ़्फ़ार (की हालत) पर अफ़्सोस न किया करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. बेशक (ख़ुद को) मुसलमान (केहने वाले)और यहूदी और साबी (या'नी सितारा परस्त) और नसरानी जो भी (सच्चे दिल से ता'लीमाते मुहम्मदी के मुताबिक़) अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿۷۰﴾

70. बेशक हमने बनी इसराईल से अ़हद (भी) लिया और हमने उनकी तरफ़ (बहुत से) पयग़म्बर (भी) भेजे, (मगर) जब भी उन के पास कोई पयग़म्बर ऐसा हुक्म लाया जिसे उन के नफ़्स नहीं चाहते थे तो उन्होंने (अंबिया की) एक जमाअ़त को झुटलाया और एक को (मुसल्सल) क़त्ल करते रहे।

وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَ صَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۷۱﴾

71. और वोह (साथ) येह ख़्याल करते रहे कि (अंबिया के क़त्लो तक्ज़ीब से) कोई अ़ज़ाब नहीं आएगा, सो वोह अंधे और बेहरे हो गए थे। फिर अल्लाहने उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ली, फिर उनमें से अक्सर लोग (दोबारा) अंधे और बेहरे (या'नी हक़्क़ देखने और सुनने से क़ासिर) हो गए, और अल्लाह उन कामों को ख़ूब देख रहा है जो वोह कर रहे हैं।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَ مَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۷۲﴾

72. दर हक़ीक़त ऐसे लोग काफ़िर हो गए हैं जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही मसीह़ इब्ने मरयम है हालां कि मसीह़ (علیہ السلام)ने (तो येह) कहा था :ऐ बनी इसराईल! तुम अल्लाह की इ़बादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है। बेशक जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा तो यक़ीनन अल्लाहने उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा दी है और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों के लिए कोई भी मददगार न होगा।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَ اِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾

وقف لازم

73. बेशक ऐसे लोग (भी) काफ़िर हो गए हैं जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन (मा'बूदों) में से तीसरा है, हालां कि मा'बूदे यक्ता के सिवा कोई इ़बादत के लाइक नहीं, और अगर वोह उन (बेहूदा बातों) से जो वोह केह रहे हैं बाज़ न आए तो उनमें से काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब ज़रूर पहोंचेगा॥

اَفَلَا یَتُوْبُوْنَ اِلَی اللّٰہِ
وَیَسْتَغْفِرُوْنَہٗ ؕ وَاللّٰہُ غَفُوْرٌ
رَّحِیْمٌ ﴿۷۴﴾

74. क्या येह लोग अल्लाह की बारगाह में रुजूअ़ नहीं करते और उस से मग़्फ़िरत तलब (नहीं) करते, हालां कि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

مَا الْمَسِیْحُ ابْنُ مَرْیَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِہِ الرُّسُلُ ؕ وَ
اُمُّہٗ صِدِّیْقَۃٌ ؕ کَانَا یَاْکُلٰنِ
الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ کَیْفَ نُبَیِّنُ لَہُمُ
الْاٰیٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰی یُؤْفَکُوْنَ ﴿۷۵﴾

75. मसीह़ इब्ने मरयम (عليه السلام) रसूल के सिवा (कुछ) नहीं हैं, (या'नी ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा और शरीक नहीं हैं), यक़ीनन उनसे पहले (भी) बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, और उनकी वालिदह बड़ी साह़िबे सिद्क़ (वलिय्या) थीं, वोह दोनों (मख़्लूक़ थे क्यों कि) खाना भी खाया करते थे। (ऐ ह़बीब!) देखिए हम उन (की रहनुमाई) के लिए किस तरह आयतों को वज़ाह़त से बयान करते हैं फिर मूलाह़िज़ा फ़रमाइये कि (इसके बावजूद) वोह किस तरह (ह़क़ से) फिरे जा रहे हैं।

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ مَا
لَا یَمْلِکُ لَکُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ؕ
وَاللّٰہُ ھُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۷۶﴾

76. फ़रमा दीजिऐ : क्या तुम अल्लाह के सिवा उसकी इ़बादत करते हो जो न तुम्हारे लिए किसी नुक़्सान का मालिक है न नफ़्' का, और अल्लाह ही तो ख़ूब सुननेवाला और ख़ूब जाननेवाला है।

قُلْ یٰۤاَھْلَ الْکِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِیْ
دِیْنِکُمْ غَیْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا
اَھْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ
وَاَضَلُّوْا کَثِیْرًا وَّ ضَلُّوْا عَنْ
سَوَآءِ السَّبِیْلِ ﴿۷۷﴾ ع

77. फ़रमा दीजिए : ऐ अह्ले किताब तुम अपने दीनमें नाह़क़ ह़दसे तजावुज़ न किया करो और न उन लोगों की ख़्वाहिशात की पैरवी किया करो जो (बे'सते मुह़म्मदी ﷺ से) पहले ही गुमराह हो चुके थे और बहुत से (और) लोगों को (भी) गुमराह कर गए और (बे'सते मुह़म्मदी ﷺ के बाद भी) सीधी राह से भटके रहे।

ع ١٠ ١٤

لُعِنَ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا مِنْ بَنِیْۤ
اِسْرَآءِیْلَ عَلٰی لِسَانِ دَاوٗدَ

78. बनी इसराईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया था उन्हें दाऊद और ईसा इब्ने मरयम (عليهما السلام) की ज़बान पर

وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾

(से) ला'नत की जा चुकी(है)। येह इस लिए कि उन्होंने ना फ़रमानी की और हद से तजावुज़ करते थे।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ
فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. (और उस ला'नत का एक सबब येह भी था कि) वोह जो बुरा काम करते थे एक दूसरे को उससे मना' नहीं करते थे। बेशक वोह काम बुरे थे जिन्हें वोह अंजाम देते थे।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ
اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي
الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. आप उन में से अक्सर लोगों को देखेंगे कि वोह काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं। क्या ही बुरी चीज़ है जो उन्हों ने अपने (हिसाबे आख़िरत) के लिए आगे भेज रखखी है (और वोह) येह कि अल्लाह उन पर (सख़्त) नाराज़ हो गया और वोह लोग हमेशा अ़ज़ाब ही में (गिरफ़्तार) रेहनेवाले हैं।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَ
مَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ
وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾

81. और अगर वोह अल्लाह पर और नबी (आख़िरुज़्ज़मां ﷺ) पर और उस (किताब) पर जो उनकी तरफ़ नाज़िल की गई है ईमान ले आते तो उन (दुश्मनाने इस्लाम) को दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें से अक्सर लोग ना फ़रमान हैं।

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَ
لَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ
وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

82. आप यक़ीनन ईमानवालों के ह़क़में बलिहाज़े अ़दावत सब लोगों से ज़ियादा सख़्त यहूदियों और मुशरिकों को पाएंगे, और आप यक़ीनन ईमानवालों के ह़क़ में बलिहाज़े मह़ब्बत सबसे क़रीबतर उन लोगों को पाएंगे जो केहते हैं बेशक हम नसारा हैं। येह इस लिए कि उनमें उ़लमाए (शरीअ़त भी) हैं और (इबादत गुज़ार) गोशा नशीन भी हैं और (नीज़) वोह तकब्बुर नहीं करते।